पाठ - छोटी – सी हमारी नदी

शब्दार्थ -

ढोर-डंगर	-	जानवर
घाम	-	धूप
डार-डार	-	डाल-डाल
किचपिच-किचपिच	-	मैना की आवाज
दूजे	-	दूसरा
छाँहों	-	छाया में
सघन	-	घना
सकारे	-	सवेरे
रेती	-	बालू
गमछा	-	तौलिया
आषाढ़	-	बरसात का एक महीना
दन्नाती	-	तेजी से
कोलाहल	-	शोर
गैंदले	-	गंदा
जग	-	संसार

काव्यांशों की व्याख्या

1. छोटी-सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,
गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पार।
पार जाते ढोर-डंगर, बैलगाड़ी चालू,
ऊँचे हैं किनारे इसके, पाट इसका ढालू।
पेटे में झकाझक बालू कीचड़ का न नाम,
काँस फूले एक पार उजले जैसे घाम।।
दिन भर किचपिच-किचपिच करती मैना डार-डार,
रातों को हुआँ-हुआँ कर उठते सियार।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक **'रिमझिम भाग-5'** में संकलित कविता **'छोटी-सी हमारी नदी'** से ली गई हैं। इसके रचयिता हैं-**श्री रवींद्रनाथ ठाकुर।** इन पंक्तियों में कवि ने नदी का वर्णन किया है।

egyanarchive

अर्थ- कवि कहता है कि हमारी नदी छोटी है और इसकी धार टेढ़ी-मेढ़ी है। गर्मी के दिनों में इसमें घुटने भर तक पानी होता है। अतः इसे पार करना सबके लिए आसान होता है। चाहे वह आदमी हो या जानवर या बैलगाड़ी। इस नदी के किनारे ऊँचे हैं और इसके पाट ढालू हैं। किन्तु इसकी तली में बालू कीचड़ का नामोनिशान नहीं है। काँस के फूल खिलने पर धूप जैसे सफेद दिखते हैं। इसकी डालियों पर मैना दिनभर किचपिच-किचपिच करती रहती हैं। रात के समय सियार हुआँ-हुआँ करते हैं।

2. अमराई दूजे किनारे और ताड़-वन,
छाँहों-छाँहों बाम्हन टोला बसा है सघन।
कच्चे-बच्चे धार-कछारों पर उछल नहा लें,
गमछों-गमछों पानी भर-भर अंग-अंग पर ढालें।
कभी-कभी वे साँझ-सकारे निबटा कर नहाना
छोटी-छोटी मछली मारें आँचल का कर छाना।
बहुएँ लोटे-थाल माँजती रगड़-रगड़ कर रेती,
कपड़े धोतीं, घर के कामों के लिए चल देतीं।।

सन्दर्भ- पूर्ववत्
अर्थ- नदी के बारे में वर्णन करते हुए कवि कहता है कि इसके दूसरे किनारे पर आम और ताड़ के पेड़ हैं। उन्हीं की छाँह में ब्राह्मण टोला बसा है। उनके छोटे-छोटे बच्चे किनारों पर उछल-उछल कर नहाते हैं। वे गमछों में पानी भरभर कर अपने शरीर पर उड़ेलते हैं। कभी-कभी जब वे नहाकर जल्दी निबट जाते हैं तो नदी में मछलियाँ पकड़ते हैं। उनके घर की औरतें नदी से बालू लेकर बर्तन (लोटे-थाली) माँजती हैं। फिर कपड़े धोती हैं और उसके बाद अन्य काम करने के लिए घर को चल देती हैं।

3. जैसे ही आषाढ़ बरसता, भर नदिया उतराती,
मतवाली-सी छूटी चलती तेज़ धार दन्नाती।
वेग और कलकल के मारे उठता है कोलाहल,
गॅदले जल में घिरनी-भंवरी भंवराती है चंचल।
दोनों पारों के वन-वन में मच जाता है रोला,
वर्षा के उत्सव में सारा जग उठता है टोला।
सन्दर्भ- पूर्ववत्।
अर्थ- कवि कहता है कि आषाढ़ के महीने में जब खूब वर्षा होती है तब यह नदी पानी से भर (उतरा) जाती है। तब इसकी धार काफी तेज हो जाती है। इसकी तेज चाल से इतनी कलकल की आवाज आती है कि चारों ओर शोर मच जाता है।

egyanarchive

इसका पानी गंदा हो जाता है। गॅदले पानी में पानी की घिरनी भंवरी की तरह चलती है। नदी के दोनों तरफ के वनों में खूब कोलाहल मचा रहता है। वर्षा के दौरान उत्सव जैसा माहौल हो जाता है। सारा संसार जाग उठता है उत्सव मनाने के लिए।

तुम्हारी नदी

प्रश्न 1. तुम्हारी देखी हुई नदी भी ऐसी ही है या कुछ अलग है? अपनी परिचित नदी के बारे में छूटी हुई जगहों पर लिखो-

उत्तर:

चंचल – सी हमारी नदी तेज इसकी धार
गर्मियों में हम बच्चे, मिलकर जाते पार

प्रश्न 2. कविता में दी गई इन बातों के आधार पर अपनी परिचित नदी के बारे में बताओ।

- धार
- पाट
- बालू
- कीचड़
- किनारे
- बरसात में नदी

उत्तर:

1. **धार-** मेरी परिचित नदी की धार बहुत तेज है।।
2. **बालू-** नदी के तल में सफेद बालू है।
3. **कीचड़-** बरसात के दौरान इस नदी में थोड़ा-बहुतं कीचड़ हो जाता है।
4. **किनारे-** इस नदी के किनारों पर नारियल के पेड़ हैं।
5. **बरसात में नदी-** बरसात के दौरान नदी में पानी भर आता है।

egyanarchive

प्रश्न 3. तुम्हारी परिचित नदी के किनारे क्या-क्या होता है?

उत्तर:

मेरी परिचित नदी के किनारे एक बड़ा-सा मंदिर है। श्रद्धालुगण नदी में नहाकर उसका जल लोटा में लेकर मंदिर में पूजा करने जाते हैं। गाँव के बच्चे नदी में खूब उछल-कूद करते हैं। वे मिलकर नदी से मछलियाँ भी पकड़ते हैं। नदी में बहुत-सी नावें भी होती हैं जो लोगों को इस पार से उस पार ले जाती हैं।

प्रश्न 4. तुम जहाँ रहते हो, उसके आस-पास कौन-कौन सी नदियाँ हैं? वे कहाँ से निकलती हैं और कहाँ तक जाती हैं? पता करो।

उत्तर:

उत्तर भारत:

- **उत्तराखंड:** गंगा, यमुना, गोदावरी, अलकनंदा, भागीरथी, सरयू, रामगंगा, कोसी
- **हिमाचल प्रदेश:** सतलुज, व्यास, चिनाब, रावी, झेलम, बेस, व्यास
- **पंजाब:** सतलुज, व्यास, रावी, बीएसएल, घग्गर
- **हरियाणा:** यमुना, घग्गर, सरस्वती, मार्कंडा
- **दिल्ली:** यमुना

मध्य भारत:

- **मध्य प्रदेश:** नर्मदा, ताप्ती, बेतवा, सोन, गोदावरी, चंबल, महानदी
- **छत्तीसगढ़:** महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, ताप्ती, इंद्रावती, सोन
- **राजस्थान:** चंबल, बनास, लूनी, सरस्वती

पूर्व भारत:

- **बिहार**: गंगा, कोसी, सोन, महानदी, घाघरा, गंडक, कमला
- **झारखंड:** दामोदर, सुवर्णरेखा, अजय, North Koel, South Koel, काँची
- **पश्चिम बंगाल:** गंगा, हुगली, दामोदर, महानंदा, ब्रह्मपुत्र, तांगों, कर्णफुली

दक्षिण भारत:

- **तमिलनाडु:** कावेरी, कृष्णा, वैगई, पलार , थमिराबरानी
- **आंध्र प्रदेश:** गोदावरी, कृष्णा, वंशधारा, गोदावरी, कृष्णा, पेन्नार
- **तेलंगाना:** गोदावरी, कृष्णा, मंजीरा , मौसी , भीमा
- **केरल:** पेरियार , पम्बा , भरतपुझा , चालकुडी , काबिनी (कपिला)

यह केवल एक छोटी सूची है। भारत में 400 से अधिक नदियाँ हैं।

egyanarchive

कविता के बाहर

प्रश्न 1. इसी किताब में नदी का ज़िक्र और किस पाठ में हुआ है? नदी के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर:

इस कविता को फिर से पढ़ो और बताओ कि नदी के बारे में उसमें क्या लिखा है।

प्रश्न 2. नदी पर कोई और कविता खोजकर पढ़ो और कक्षा में सुनाओ।

उत्तर:

नदी की व्यथा

मैं बहती तेरी आशा में, तुम पास हमारे आओगे।
बैठ किनारों पर मेरी, मातृत्व सुख पाओगे।

कल-कल बहती धाराओं में, ही मौज हमारी है।
युगों - युगों मेरे तट पर, तुमने जिंदगी गुजारी है।

हम आज भी अपनी हद में हैं, तूने सारे तोड़ दिए।
कहीं बांध बैराज बना, मेरी धारा को मोड़ दिए।

प्यास बुझाने जन-जन की, मैं धरा पर आयी हूँ।
प्राकट्य इसी हेतु मेरा, मैं आज बड़ी घबरायी हूँ।

सुख दुख में साथ रही हूँ मैं, इसका स्वंय साक्षी हूँ।
सुख समृद्धि ऐश्वर्य बढ़े, सदियों से आकांक्षी हूँ।

पर मेरे अस्तित्वों पर हीं, आज भयानक ग्रहण लगे।
विकास नहीं विनाश के लिए, सारे अतिक्रमण लगे।

मुझको जिंदा रहने दो, ये सृष्टि जिंदा रह पाएगी।
वरना मेरी अंत हुई तो, ये सृष्टि भी मिट जाएगी।

egyanarchive

प्रश्न 3. नदी में नहाने के तुम्हारे क्या अनुभव हैं?
उत्तर:
एक बार जब मैं नानी के घर गया था, मुझे नदी में नहाने का अवसर मिला। नदी के अथाह पानी में नहाना एक अलग किस्म का सुखद अनुभव देता है। पानी से निकलने का कभी मन नहीं करता। मैं तो बहुत देर तक नहाता रहा। जबकि मेरे साथ के सारे बच्चे निकल गए। फिर नानाजी के आने और उनके कई बार कहने पर मैं नदी से बाहर आया। आह! कितना मजेदार है नदी में नहाना। काश! ऐसा मौका बार-बार मिलता।

प्रश्न 4. क्या तुमने कभी मछली पकड़ी है? अपने अनुभव साथियों के साथ बाँटो।
उत्तर:
स्वयं करो।

ये किसकी तरह लगते हैं?

1. नदी की टेढ़ी-मेढ़ी धार?
2. किचपिच-किचपिच करती मैना?
3. उछल-उछल के नदी में नहाते कच्चे-बच्चे?

उत्तर:

1. साँप की तरह।
2. स्वयं करो।
3. ऐसे लगते है जैसे बहुत-सारी मछलियाँ एकसाथ उछल-कूद कर रही हों।

कविता और चित्र

कविता के पहले पद को दुबारा पढ़ो। वर्णन पर ध्यान दो। इसे पढ़कर जो चित्र तुम्हारे मन में उभरा उसे बनाओ। बताओ चित्र में तुमने क्या-क्या दर्शाया?

उत्तर:

स्वयं करो।

कविता से

1. इस कविता के पद में कौन-कौन से शब्द तुकांत हैं? उन्हें छाँटो।

उत्तर:

तुकांत शब्दों की सूची

- धार-पार
- चालू-ढालू
- नाम-धाम
- डार-सियार
- वन-सघन
- नहालें-ढालें
- नहाना–छाना
- रेती-देती
- उतराती-दलानी
- कोलाहल-चंचल
- रोला-टोला।

egyanarchive

प्रश्न 2. किस शब्द से पता चलता है कि नदी के किनारे जानवर भी जाते थे?

उत्तर: ढोर-डंगर।

प्रश्न 3. इस नदी के तट की क्या खासियत थी?

उत्तर: तट ऊँचे थे और पाट ढालू।

प्रश्न 4. अमराई दूजे किनारे …… चल देतीं।

कविता की ये पंक्तियाँ नदी किनारे का जीता-जागता वर्णन करती हैं। तुम भी निम्नलिखित में से किसी एक का वर्णन अपने शब्दों में करो

(i) हफ्ते में एक बार लगने वाला हाट

(ii) तुम्हारे शहर या गाँव की सबसे ज्यादा चहल-पहल वाली जगह

(iii) तुम्हारे घर की खिड़की या दरवाज़े से दिखाई देने वाला बाहर का दृश्य

(iv) ऐसी जगह का दृश्य जहाँ कोई बड़ी इमारत बन रही हो।

उत्तर: **हफ्ते में एक बार लगने वाला हाट -**

हमारे इलाके में मंगल बाजार हर हफ्ते लगता है। उस दिन दोपहर के बाद से ही सड़कों पर चहल-पहल शुरू हो जाती है। और शाम होते-होते बाजार तरह-तरह की दुकानों से सज जाता है। यहाँ हर तरह की चीज़ सस्ते में उपलब्ध है। जो स्थायी दुकानें हैं उनको विशेष रूप से सजाया जाता है। जो दुकानें उस दिन के लिए लगायी जाती हैं, वे भी अच्छी तरह सजी होती हैं। सब्जीवाले सब्जियों को कलात्मक ढंग से सजाते हैं। मेले जैसी भीड़ में से। गुजरना बड़ा मुश्किल हो जाता है। स्त्री-पुरूष, बच्चे-बूढ़े सभी मंगल बाजार से अपनी जरूरत की चीजें खरीदते नजर आते हैं। इस बाज़ार की खासियत है कि एक जगह पर सेब जरूरत की चीजें मिल जाती हैं।

egyanarchive

प्रश्न 5. **तेज़ गति, शोर, मोहल्ला, धूप, किनारा, घना**

ऊपर लिखे शब्दों के लिए कविता में कुछ खास शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। उन शब्दों को नीचे दिए अक्षरजाल में ढूँढ़ो।

उत्तर:

धा	म		वे	
			ग	
		टो		
	रो	ला		पा
स	घ	न		ट

- तेज गति – वेग
- शोर – रोला
- मोहल्ला – टोला
- धूप – घाम
- किनारा – पाट
- घना – सघन।